रिश्ते जोर से नहीं प्यार मोहब्बत से पकड़े जाते है।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह
देहरादून शुक्रवार 23 अक्टूबर 2020
पेज थ्री
www.page3news.in

सांस्कृतिक और धार्मिक अवसर

सो, यह नवरात्रि बाहर निकल कर अधिक से अधिक लोगों के साथ घुलने–मिलने, डांडिया खेलने और सामूहिक तौर पर देवी पूजन करने का मौका भले न दे रही हो, पर अपने अंदर विनम्रता भाव को मजबूत करके कुछ नए गुणों की पात्रता हासिल करने में तो कोई बाधा नहीं है।

जया शाह।।

नौ दिनों के इस पर्व को लेकर जिस तरह का उत्साह हर साल सार्वजनिक तौर पर दिखता रहा है, कोरोना काल में वैसा न दिखना स्वाभाविक है। लेकिन नवरात्रि जैसे सांस्कृतिक और धार्मिक अवसर हमें सामाजिकता और सामूहिकता का जितना संस्कार देते हैं उतना ही मन के स्तर पर तरोताजा भी करते हैं। सो, यह नवरात्रि बाहर निकल कर अधिक से अधिक लोगों के साथ घुलने–मिलने, डांडिया खेलने और सामूहिक तौर पर देवी पूजन करने का मौका भले न दे रही हो, पर अपने अंदर विनम्रता भाव को मजबूत करके कुछ नए गुणों की पात्रता हासिल करने में तो कोई बाधा नहीं है।

यह बात पूरी दुनिया में रेखांकित की जाती रही है कि ईश्वरीयता के स्त्री रूप को प्रतिष्ठित करने वाला, सृष्टि की संचालक शक्ति के रूप में पूजने वाला अकेला बड़ा समाज अब भारत में ही बचा है। हर पुराने समाज की तरह हमारे समाज में भी ऐसी कुछ धाराएं मिलती हैं जिन्हें स्त्रियों के प्रति आदर भाव के लिए नहीं जाना जाता, लेकिन भारतीय समाज में स्त्री तत्व का उच्च आध्यात्मिक स्थान एक निर्विवाद तथ्य है। अफसोस की बात है कि जिन असुरों के भय से देवता मारे–मारे फिरते थे, उनका संहार करने के लिए देवियों के सृजन की गाथा हम नवरात्रों में गाते हैं, लेकिन अपने रोजमर्रा के जीवन में स्त्रियों को सामान्य मनुष्य समझने का लोकाचार भी भूल जाते हैं।

पिछले चार–पांच दशकों की बात करें तो जैसे–जैसे महिलाओं के घर से बाहर निकलकर स्कूल–कॉलेज और नौकरियों में जाने, संगठित होने और अपने अधिकार हासिल करने की संभावना बनती गई, उनके दमन–उत्पीड़न के प्रयास भी तेज होते गए। यौन उत्पीड़न इस बड़ी प्रक्रिया का ही एक हिस्सा है, हालांकि शीशे में बाल और कच्चे घड़े में दरार वाली हमारी पोंगा सोच इसको किसी और ही पैमाने पर पहुंचा देती है।

आलम यह है कि नैतिकता की पुरानी कसौटियां हमारे हाथ से निकल चुकी हैं और स्त्री–पुरुष बराबरी वाले आधुनिक मूल्यों तक हम पहुंच नहीं पा रहे हैं। महिलाओं–बच्चों को पुरुषों जैसा ही सामान्य मनुष्य समझना हमसे नहीं हो रहा है, लिहाजा उन्हें सम्मान देने का दावा भी महज पाखंड बन कर रह गया है। लड़कियों, महिलाओं के प्रति जिस तरह की हैवानियत की खबरें चारों ओर से आ रही हैं, वे घटनाएं ही नहीं, उन पर समाज के विभिन्न हिस्सों की, खासकर प्रशासनिक तंत्र की प्रतिक्रिया भी दुनिया के सामने हमारी हकीकत बयान करने के लिए काफी है।

यौन उत्पीड़न के मामलों में आम प्रवृत्ति यही देखी जा रही है कि आरोपी ही नहीं, स्वयं उत्पीड़ित स्त्री का परिवार और पास–पड़ोस भी पहली कोशिश घटना को दबाने या कम करके बताने की करते हैं। केवल चरम हिंसा के मामले दुनिया के सामने आ पाते हैं, वह भी तब जब उन्हें छिपाना असंभव हो जाए। इसके आगे दिखाई देती है स्थानीय पुलिस से लेकर सत्ता सोपान के शीर्ष तक एक ऐसी हिसाबी प्रवृत्ति, जिसका मकसद दोषी को दंडित करने से ज्यादा खुद को दाग–धब्बों से बचाने का होता है।

पञ्चप्राणो

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। पञ्चप्राणाः ये जीवों के पांच प्राणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मानव शरीर को ५ प्राण एवं ५ उप–प्राण में विभक्त किया गया है। ५ मुख्य प्राण हैं – अपान, समान, प्राण, उदान एवं व्यान। उसी प्रकार ५ उप–प्राण हैं – देवदत्त, वृकल, कूर्म, नाग एवं धनञ्जय। षड्रसाःरू ये छह रसों का प्रतिनिधित्व करते हैं (षड्रसाः = षड. रस)। किसी भी वास्तु का स्वाद इन्ही ६ रसों के कारण अलग–अलग होता है। ये हैं – मधुर (मीठा), अम्ल (खट्टा), लवण (नमकीन), कटु (कड़वा), तिक्त (तीखा) एवं कसाय (कसैला)। सप्तर्षयरूरू ये सप्तर्षियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वैसे तो प्रत्येक मन्वन्तर में सप्तर्षि अलग–अलग होते हैं किन्तु प्रथम स्वयंभू मनु के काल के सप्तर्षियों, जो ब्रह्मदेव के मानस पुत्र हैं, को प्रधानता दी जाती है। ये हैं – मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य एवं वशिष्ठ।

संपादकीय

चार्टर में संशोधन

यूं तो कई देश अब खेल में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने की बात कर रहे हैं। 2004 में एथलीटिक्स के ओलंपिक चार्टर को संशोधित करके उसमें महिला समानता की पैरवी की गई। इस संशोधन का असर भी हुआ। सन 2008 में पेइचिंग ओलंपिक में महिलाओं की भागीदारी 42 प्रतिशत तक पहुंची। यह तय है कि महिलाएं किसी भी स्तर पर पुरुषों से कमतर नहीं हैं परंतु पुरुष सत्तात्मक वैश्विक व्यवस्था के गले से यह बात नहीं उतरती। इसीलिए वे तमाम हथकंडों का प्रयोग करते हुए महिलाओं को हाशिए पर धकेलने की कोशिश करते हैं। 'बैटल ऑफ सेक्सेज' के नाम से प्रचारित 1973 में खेले गए इस मैच में बॉबी रिग्स की हार ने न केवल उन्हें सार्वजनिक तौर पर शर्मिंदा किया बल्कि महिलाओं के प्रफेशनल टेनिस को स्थापित करने में मदद की। बिली जीन किंग ने समानता और सामाजिक न्याय के लिए अपना संघर्ष आज भी जारी रखा है। 2017 में बिली ने नॉर्थ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा, 'समान कार्य के लिए समान वेतन एक सपना नहीं होना चाहिए। यह आपकी पीढ़ी के लिए आजादी के इनाम में से एक होना चाहिए। इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है।' हैरानी तो इस बात की है कि दुनिया भर में समान कार्य के लिए समान वेतन का नियम लागू है, फिर भी महिलाएं खेल के मैदान में इस अंतर को निरंतर झेल रही हैं जो मानवाधिकार की खुलेआम अवमानना है।

नेशनल टीम की ओर से खेलते हुए पुरुष और महिला खिलाड़ियों को बराबर वेतन दिया जाएगा। ऑस्ट्रेलिया, नॉर्वे और न्यूजीलैंड ऐसे देश हैं जहां पहले से ही यह नियम लागू है। परंतु ये देश अपवाद हैं।

जूतों की ओर इशारा

ऋतु सारस्वत।।

सितंबर का महीना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिला खिलाड़ियों के लिए उपलब्धियों भरा रहा। वेस्टइंडीज की महिला खिलाड़ी स्टेफनी टेलर ने टी 20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों में 3000 रनों का आंकड़ा छू लिया। महिला और पुरुष, दोनों ही तरह के इंटरनेशनल क्रिकेट में यह मुकाम हासिल करने वाली वह दूसरी और वेस्टइंडीज की पहली क्रिकेटर हैं। स्टेफनी से पहले यह सफलता न्यूजीलैंड की सूजी बेट्स को मिली थी। टी 20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले पुरुष और महिला क्रिकेटरों की टॉप 5 लिस्ट में पहले दो स्थानों पर काबिज महिलाएं साफ संदेश दे रही हैं कि पुरुष सत्तात्मक समाज अब यह भ्रम ना पाले कि खेलों पर उसका ही वर्चस्व है।

दूसरी उपलब्धि यह रही कि ब्राजील फुटबॉल फेडरेशन ने महिला टीम को पुरुष टीम के बराबर वेतन देने का फैसला किया है। यानी नेशनल टीम की ओर से खेलते हुए पुरुष और महिला खिलाड़ियों को बराबर वेतन दिया जाएगा। ऑस्ट्रेलिया, नॉर्वे और न्यूजीलैंड ऐसे देश हैं जहां पहले से ही यह नियम लागू है। परंतु ये देश अपवाद हैं। अन्य देशों में अब भी महिला खिलाड़ियों को यह हक नहीं मिला है। ब्राजील

की महिला फुटबॉल खिलाड़ियों को भी यह आसानी से नहीं मिला। इसके लिए उन्होंने लंबा संघर्ष किया। साल 2019 में फीफा महिला विश्व कप में ब्राजील की स्टार फुटबॉलर मार्ता द सिल्वा ने अपने विश्वास और जुनून के चलते 13 जून 2019 को ऑस्ट्रेलिया और ब्राजील के बीच हुए मैच में विश्व कप में अपना सोलहवां रिकॉर्ड गोल करने के बाद अपने जूतों की ओर इशारा किया। वह समान मेहनताने के समर्थन में 'गो इक्वल' के लोगो वाले जूते पहनकर खेल रही थीं।

यही नहीं, नवंबर 2019 में ब्राजील की महिला फुटबॉल खिलाड़ियों ने पुरुष खिलाड़ियों की तुलना में कम मेहनताना मिलने का विरोध करते हुए एक मैच के दौरान गोल स्कोर को 20 प्रतिशत कम करके दिखाया क्योंकि उन्हें अपने पुरुष साथी खिलाड़ियों की तुलना में 20 प्रतिशत कम वेतन मिलता है। आखिर उनका संघर्ष काम आया और सितंबर 2020 में ब्राजील फुटबॉल फेडरेशन ने उन्हें पुरुष टीम के बराबर वेतन देने का फैसला किया। वैश्विक स्तर पर दशकों लंबी मुहिम और समान वेतन के लिए अनेक कानून होने के बावजूद महिलाओं को अब भी समान काम के लिए पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है। संयुक्त राष्ट्र से लेकर विभिन्न मानव अधिकार संगठन भी इस विषमता को मिटाने में कुछ खास मदद नहीं कर पाए।

मार्च 2019 में भारतीय क्रिकेट टीम और भारतीय महिला क्रिकेट टीम की नई कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट जारी की गई। बीसीसीआई की इस लिस्ट में महिला क्रिकेट खिलाड़ियों का वेतन पुरुष क्रिकेटरों के मुकाबले 90 प्रतिशत कम है। अगर इसके पीछे यह मान्यता है कि महिला खिलाड़ी पुरुषों से कमतर हैं तो यह सत्य नहीं है क्योंकि बीते साल महिला टीम की मिताली राज 200 अंतरराष्ट्रीय वनडे खेलने वाली पहली महिला क्रिकेटर बनी थीं। इसके साथ ही लक्ष्य का पीछा करते हुए सबसे ज्यादा औसत से रन बनाने के मामले में मिताली राज महेंद्र सिंह धोनी और विराट कोहली से भी आगे निकल गई हैं।

असमान वेतन की यह स्थिति पूरे विश्व में है। अमेरिकी महिला फुटबॉल टीम अब तक सबसे ज्यादा चार बार वर्ल्ड चौंपियन बन चुकी है। उसने 1991,1999, 2015 और 2019 में खिताब अपने नाम किया था। अमेरिकी महिला फुटबॉल टीम बराबर वेतन के लिए लंबे समय से संघर्ष कर रही है।

सूडोकु नवताल- 5507

★★★★☆ मध्यम

		5			8			3
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6			7			1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
6			2			7		

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5506 का हल

9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8

अपना ब्लॉग

टीम की मांग पूरी करेंगे

मोहन। हाल ही में डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रेसिडेंट पद के उम्मीदवार जो बाइडेन ने कहा कि वे अमेरिका की महिला टीम को पुरुषों के समान वेतन का समर्थन करते हैं और अगर वे राष्ट्रपति बनते हैं तो टीम की मांग पूरी करेंगे। अमूमन महिला खिलाड़ियों को समान वेतन ना देने के लिए यह तर्क दिया जाता है कि महिलाएं शारीरिक बल के मामले में पुरुषों से कमतर होती हैं। जॉन मैकनरो ने 2017 में अपने एक ट्वीट में कहा था कि महिला टेनिस में पहली रैंक पर खेलने वाली सेरेना अगर पुरुषों के साथ खेल रही होतीं तो उनकी रैंक 700वीं होती। ऐसी ही तर्कहीन बातें सत्तर के दशक में टेनिस सितारे बॉबी रिग्स ने भी कही थीं। उनका दावा था कि महिलाओं के टेनिस में कोई दम नहीं है। उन्होंने तत्कालीन नंबर वन महिला खिलाड़ी बिली जीन किंग को चुनौती दी थी।